'सुभद्रा कुमारी चौहान एक साथ ही प्रगतिशील स्त्री, गृहिणी या कवि, लेखिका, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, जननेत्री व राजनेता थी। वे जमीन से जुड़ी हुई स्त्री है।

दलित चेतना और स्त्रीवादी विमर्श को उठाने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान हिन्दी की पहली कहानीकार हैं।'सीधे-सीधे चित्र'' सुभद्रा कुमारी चौहान का तीसरा व अंतिम कथा संग्रह है। इसमें कुल 14 कहानियां हैं। रूपा, कैलाशी, नानी, बिआहा, कल्याणी, दो सखियाँ, प्रोफेसर मित्रा, दुराचारी व मंगला 8 कहानियों की कथावस्तु नारी प्रधान पारिवारिक सामाजिक समस्याओं पर आधारित है। सुभद्रा जी की समकालीन स्त्री-कथाकारों की संख्या अधिक नहीं थी। अपनी व्यापक कथा दृष्टि से वे एक लोकप्रिय स्त्री विमर्श की ध्वज वाहिका कथाकार के रूप में हिन्दी साहित्य जगत में सुप्रतिष्ठित है। समय के साथ भले ही सुभद्रा जी की कहानियों के परिवेश का वर्णन आज के समय से भिन्न रहा हो, लेकिन जिस समय वह अपनी लेखनी चला रही थी; सामाजिक व पारिवारिक कुरीतियों एवं समस्याओं पर वह एक क्रान्तिकारी कदम रहा है।

सुभद्रा जी को हिन्दी साहित्य इतिहास में विशेष स्थान नहीं मिल पाया। उन्हें देश भक्ति की भावना से जोड़कर एक क्षेत्र विशेष में सीमित कर दिया गया।

महादेवी वर्मा ने अपनी रचना 'पथ के साथी' में सुभद्रा कुमारी चौहान के विषय में कहती हैं-'परम्परा का पालन ही जब स्त्री का परम कर्तव्य समझा जाता था तब वे उसे तोड़ने की भूमिका बाँधती हैं-चिर-प्रचलित रूढ़ियों और चिर-संचित विश्वासों को आघात पहुंचाने वाली हलचलों को हम देखना-सुनना नहीं चाहते। हम ऐसी हलचलों को अधर्म समझकर उनके प्रति आख मींच लेना उचित समझते है, किन्तु ऐसा करने से काम नही चलता। वह हलचल और क्रान्ति हमें बरबस झकझोरती है और बिना होश में लाये नहीं छोड़ती।'

सुभद्रा जी अनेक समस्याओं की ओर इतनी पैनी दृष्टि रखती हैं कि सहज भाव से कही गयी सरल कहानी का अन्त भी हमे झकझोर डालती है।

****

सन्दर्भ सूची:-
1.हाशिए उलांघती औरत (कहानी) हिन्दी संपादक, रमणिका गुप्ता, अर्चना वर्मा, पृष्ठ सं. 21
2.सुभद्रा कुमारी चौहान, सम्पूर्ण कहानियाँ-डॉ0 मधु शर्मा, पृष्ठ सं. 171
3.सुभद्रा कुमारी चौहान, सम्पूर्ण कहानियाँ-डॉ0 मधु शर्मा, पृष्ठ 159

हिमांशु जोशी कृत 'कगार की आग' उपन्यास में ऑचलिकता

नवीन नाथ
शोधार्थी
मो0 8193821884, 9258379184

शोध सारांश- उपन्यास साहित्य में हिंमाशु जोशी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उन्होंने हिंदी के ऑचलिक उपन्यासों को बहुत कुछ नयापन दिया है। उनके दो आंचलिक उपन्यास हैं- अरण्य और कगार की आग। हिमांशु जोशी ने कगार की आग, उपन्यास में पहाड़ की एक दलित महिला को उभारा है, जिसमें अल्मोड़ा जिले के लघौना गांव की गोमती की कहानी है।

मुख्य शब्द- ऑचलिकता, क्षेत्र विशेष की पृष्ठभूमि, भौगोलिक राजनीतिक पृष्ठभूमि, संस्कृति, जातिगत चेतना, अज्ञानता, अत्याचार, विवाह समस्या, परिवार विभाजन, निष्कर्ष।

'कगार की आग' उपन्यास में ऑचलिकता- 'कगार की आग' उपन्यास की ऑचलिकता को स्पष्ट करते हुए हिमांशु जोशी लिखते हैं: ''आग की तपिश ही नहीं, इसमें हिम का दाह भी है। अनुभव की प्रमाणिकता और अनुभूति की गहनता ने इस कालत्रयी कृति को एक नया आयाम दिया है। यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है, शायद बर्फीले पर्वतीय क्षेत्र की इस कथा में एक अंचल विशेष की धरती की धड़कन है। एक जीता जागता एहसास भी, गोमती, पिरमा, कन्नु के माध्यम से स्वतंत्र मानव समाज के कई चित्र उजागर हुए हैं। इसलिए यह कुछ लोगों की कहानी, नहीं सबकी कहानी बन गयी है। देश-काल की परिधि से परे।''[1] हिमांशु जोशी ने भौगोलिक दृष्टि से गांव का प्राकृतिक वातावरण चित्रित किया है। उत्तराखण्ड के लघौना गांव के पास होने वाली लोहारों की बस्ती का वर्णन लेखक ने किया है। इस गांव के पास ही जोस्यूड़ा की नदी बहती है। प्रारम्भ में ही हिमांशु जोशी जी ने स्वीकार किया है: ''एक गांव की कहानी है यह। गांव का नाम कुछ भी हो सकता है। किसी भी नामों से पात्रों को संबोधित किया जा सकता है। क्या अंतर पड़ता है इससे! यह उन अभिशापों की जीवन गाथा है जो समाज द्वारा बहिष्कृत किए गए हैं। सदा के लिए तिरस्कृत।''[2]

हिमांशु जोशी ने जिस प्रकार प्राकृतिक वातावरण को चित्रित किया है, ठीक उसी प्रकार ऑचलिकता को भी अनेक रूपों में विभक्त किया है। गोमती खुशाल के घर रहने लगती है। वहीं पंचायत के चलते पिरमा की हत्या हो जाती है। इसी कारण यहाँ आत्महत्या के दिखावे का वर्णन इस प्रकार हुआ है: ''आधी रात तक गांव के बुजुर्ग-बूढ़ों को अपने घर में घेरकर पंचायत बैठाता रहा। पुलिस पटवारी का भय था, आदमी की हत्या के मामले में सारा गांव उजड़ जाता, इसलिए पिरमा की लाश चुपके से घर में बांधकर उस पर मिट्टी का तेल छिड़कर आग लगा दी। उसने कह दिया कि झोपड़ी में आग लगने के कारण जलकर मर गया बेचारा।''[3]

लोक जीवन आत्मा की संस्कृति होती है। 'कगार की आग' में लेखक ने मेले, त्यौहार, जैसे- देवीधुरा का मेला, फूलडोल मेला, हरेला, ब्यानधुरा मेला का वर्णन किया है। गोमती, देवीधुरा मेले में अपनी सहेली धरी के साथ जाती है। जब गोमती फूलडोल मेले में जाती है, तो खुशाल उसे जबरदस्ती गहने पहनाता है। आधुनिक समाज तीन वर्गों में विभक्त है, जिसमें 'कगार की आग' उपन्यास को दो वर्गों में विभक्त किया गया है। निम्न वर्ग और मध्य वर्ग। खुशाल राम निम्न वर्ग का प्रतीक है, वह गोमती को अपने घर रहने के लिए कहता है, लेकिन अब

खुशाल की स्थिति सुधर गई है। फिर भी उसमें जातिगत चेतना है। गोमती डर से खुशाल के पास आती है, तब वह उसे चलने की सलाह देकर कहता है ''मरने से क्या होगा? मेरे घर चल। मैं रख लूंगा तुझे! तेरी ही जात बिरादरी का हूँ। सोर का अब नरसिंह डांडा के 'फ्लौट' में बस गया हूं।''[4]पहाड़ों के बीच में दलितों, लोहारों की वह बस्ती, जिसे लेखक ने सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। यहाँ शिक्षा पूरी तरह विकसित नहीं हो पाती है। इस बात पर बल देते हुए गोमती का देवर आता है और पति पिरमा को पीटते हुए देखता है। अज्ञानता के कारण देवराम भाभी से कहता है: ''बोज्यू ठुल दा का इलाज किया था नहीं? तो वह जबाब देती है 'क्यों नहीं? सब कुछ करवाया, देवर ज्यू झाड़ फूँक किया, दवाई-पताई की। घोड़िया डाक्टर का भी इलाज चला।''[5]

हिमांशु जोशी ने न केवल गांव की अंधश्रद्धा को कल्पित किया है, अपितु अशिक्षा का भी निमार्ण किया। देवराम बौखलाकर पधान से कह उठता है: ''तुम भी पधान जाने बिना ही कह देते हो, तुम को पता भी है कि पिरमा की मां के किरिया करम का खर्च किसने किया? अपना सीना ठोकते हुए कलिय का ने कहा, 'कर्जा लेकर पापिन पर कफन मैंने डाला था, मैने! उसे चुकाने को तो कोई नहीं कहता, यदि ब्याज के रूप में थोड़ा बहुत काम कभी करवा लेता हूं तो सब की आंखों में चूमता है।''[6]

पर्वतीय जन -जीवन अज्ञानता से भरा रहता है। प्रत्येक व्यक्ति अज्ञानी का शोषण करता है। अशिक्षा के कारण गोमती के पति पिरमा को भी चोरी की दशा में पकड़कर ले जाया जाता है। कलिय का उस पर आरोप लगाते हैं। इस संबंध में खिमु का कहते हैं: ''सत्यानास हो इस कलिय का! चोरी किसी ने की और सजा कोई भुगते? अपने तेजुआ के बदले इस सुंअर की औलाद ने बेचारे पिरमा को हौलात भिजवा दिया।''[7]

कलिय का में स्वार्थ प्रवृति की स्थिति दिखायी देती है। गोमती नरसिंह डांडे में खुशाल राम के घर रहती है। उसे देखकर कलिय को चेन नहीं आता है। 'कगार की आग' में उसका वर्णन इस प्रकार हुआ है: ''कलिय का की सारी जिंदगी कूटनीति में ही बीती थी। कब कौन सी तुरफ चाल चलनी है, भली-भांति जानते थे, खुशाल के घर गोमती यों ही बैठ जाए, उन्हें सब स्वीकर होता।''[8]

पहाड़ी जन जीवन में विधवा- विवाह भी प्रमुख समस्या है। पहाड़ी आंचल में लडकी की शादी बहुत कम उम्र में हो जाती है। विवाह बड़े उम्र के व्यक्ति के साथ किया जाता है। यहां गोमती के पति पिरमा का देहांत हो जाता है। फिर वह खुशाल के साथ रह लेती है। गोमती की मॉ की ननद भी आत्महत्या कर लेती हैं। मां की स्थिति इस प्रकार हुई है: ''ननद खुबानी की डाल पर रस्सी बांधकर आत्महत्या करती है। ससुराल में उसे दःख था। यहां मैके वाले अपने घर टिकने नहीं देते थे। बेचारी विधवा थी। पेट में किसी का बच्चा रह गया था। लोक लाज के भय से मुक्ति पाने के लिए यह रास्ता अपना लिया था।''[9]

परिवार विभाजन की अद्भुत प्रणाली भी पर्वतीय अंचल में दिखायी देती है। पिरमा और कलिय का के खेतों का बटवारा जब होता है, तो इस संबंध में देवराम मन ही मन सोचता है: ''कका को भी समझना होगा कि इन विचारों पर हाथ न उठाएं। जब घर के हिस्से हो गए, जमीन भी बंट गई तो फिर इन्हें अपनी बेगार में क्यों लगाते हो? बंटवारे के समय आपने क्या दिया इन्हें? खाने-पढ़ाने के लिए भांडे बरतन भी पूरे नहीं।''[10]

निष्कर्ष-

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिमांशु जोशी हिंदी साहित्य के आंचलिक उपन्यासकार हैं। उन्होंने 'कगार की आग' उपन्यास में उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जिले के एक लघौना गांव की कथा- व्यथा व्यक्त की है। साथ-साथ उस प्रदेश की भौगोलिकता, संस्कृति, नदी, घराट का भी चित्रण किया है। अतः हिमांशु जोशी कृत 'कगार की आग' उपन्यास आंचलिक दृष्टि से खरा उतरता है।

****

संदर्भ-

1.कगार की आग, हिंमाशु जोशी, मुखपृष्ठ
2. वही, भूमिका से
3. कगार की आग, हिमांशु जोशी, पृ0 105
4. वही, पृ0 63
5. वही, पृ0 45
6. वही, पृ0 50
7. वही, पृ0 22
8. वही, पृ0 57
9. वही, पृ0 37
10. वही, पृ0 47